

पुस्तक समीक्षा : संकट प्रदाता और जनता

भ्रष्टाचार को उजागर करना बड़ा ही कठिन कार्य है और समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाज के बीच लाना उससे भी बड़ी हिम्मत दिखाने का कार्य है। अकिनिक पब्लिकेशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'संकट प्रदाता और जनता' पुस्तक एक सच्चाई को उजागर करती हुई पुस्तक है। इसकी लेखिका डॉ० नीतू सिंह तोमर ने बहुत लगन एवं शोध के साथ इसे तैयार किया है। समाज के लगभग सभी आयामों को इसमें सम्मिलित किया गया है।

आज विकास की ऊँचाई छूने जा रहा भारत जब इस प्रकार के भ्रष्टाचार से लिप्त पाया जाता है तो आश्चर्य होता है। प्रस्तुत पुस्तक में भ्रष्टाचार की दासता को जमीनी तौर पर देखा गया है और उससे जनता को जागरूक किया गया है। लेखिका ने समाज के प्रत्येक पक्ष को छूने का प्रयास किया है। समाज में किस प्रकार से निर्धनता, कुपोषण, शिक्षा, न्याय व्यवस्था, ग्रामीण समाज व्यवस्था में कमियाँ, अनुशासन एवं दण्डात्मक व्यवस्था में कमी, यहाँ तक कि ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था में भी कमी को ध्यान देते हुए शोध परक लेख दिए गए हैं। वास्तव में यह लेख नहीं है, यह भ्रष्टाचार एवं कमियों के विषय में किए गए शोध विषय हैं। शोध प्रबन्धन बहुत ही प्रशंसनीय है।

समाजशास्त्र में यद्यपि कोई प्रयोगशाला नहीं होती तथापि यदि किसी एक सामाजिक इकाई को शोध विषय के रूप में सम्मिलित किया गया हो तो उस इकाई पर अध्ययन व निकाले गए निष्कर्ष पूरे समाज पर लागू किए जा सकते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) को आधार मानकर अधिकांश अध्ययन पूर्ण किया गया है। वास्तव में निकाले गए निष्कर्ष भारतीय समाज पर लागू होते हैं। न केवल हिन्दू समाज वरन् मुस्लिम समाज की सांस्कृतिक कमियों की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया गया है मुस्लिम समाज के विषय में अधिकांश लोग यह जानते ही नहीं कि मुस्लिम समाज में भी जाति व्यवस्था व्याप्त है। इस पुस्तक में मुस्लिम जाति व्यवस्था के विषय में जानकारी दी गई है। मुस्लिम संस्कृति में प्रातः काल नमाज से पहले अजान दी जाती है। यह 'अजान' लोगों के लिए नमाज में बुलाने का एक तरीका माना जाता है। अजान देने वाले को 'मुअज्जिन' कहा जाता है। नमाज में क्या क्या है और उसका अर्थ क्या है? यह भी पाठकों को जानकारी बढ़ाता है। आज इस समाज के प्रति फैली भ्रान्तियों को दूर कर समाज में नमाज लोगों को पवित्र बनाने का कार्य करती है।

हिन्दू समाज में भी अनेक 'संस्कार' हैं। उनमें से एक है श्राद्ध कर्म! इस कार्य को किस प्रकार से किया जाय, यह कितने प्रकार का होता है, किन किन शास्त्रों में किस किस प्रकार से श्राद्ध किया जाता है आदि विधियों के विषय में बहुत ही शोध एवं विस्तार के साथ बताया गया है। लेखिका का मानना है कि 'श्राद्ध' में केवल ब्राह्मण को ही क्यों भोजन कराते हैं? इस अवसर पर भूखे व्यक्तियों एवं अपंगों को भोजन कराया जाय तो अधिक उचित होगा। इस मान्यता को परिवर्तित किया जाना चाहिए।

अनेक सामाजिक समस्याओं की ओर भी प्रस्तुत शोध परक पुस्तक में उल्लेख व निदान बताया गया है। वैश्यावृत्ति, दहेज, स्त्री हिंसा, महिला शिक्षा, मुस्लिम नारी और शरीयत, बलात्कार आदि अनेक समस्याओं को बड़ी ही सजगता के साथ उठाया गया है। समाज में इसी से सम्बन्धित 'एड्स' जैसी भयानक बीमारी से भी जागरूक करने का प्रयास किया गया है।

प्राथमिक शिक्षा, उच्चशिक्षा में व्याप्त भ्रष्टाचार की ओर भी ध्यान दिलाया गया है। वास्तव में उच्चशिक्षा की स्थिति उत्तर प्रदेश में विशेष रूप से शोचनीय है। इसमें किस प्रकार से सुधार लाया जा सकता है। यदि इन सुझावों पर शासन ध्यान दे तो उच्चशिक्षा की स्थिति को सुधारा जा सकता है। न्यायिक व्यवस्था के दोषों की ओर भी ध्यान दिया गया है। शासन में बैठे जनप्रतिनिधियों के व्यवहार का भी उल्लेख किया गया है उनमें अपने व्यवहार में किस प्रकार परिवर्तन लाया जा सकता है, इसका भी सुझाव दिया गया है।

मद्यपान आज समाज की नींव को खोखला बना रहा है। इसकी मात्रा में वृद्धि एक चिन्ता का विषय है। यह समाज की युवा पीढ़ी को बर्बाद कर रहा है। मद्यपान की प्रवृत्ति न केवल नगरों की समस्या है वरन् यह ग्रामीण क्षेत्रों में नगरों की तुलना में अधिक पाई जाती है। प्रस्तुत शोध में बताया गया है कि प्रायः जो ठेकेदार इस व्यवस्था में लिप्त हैं वे सरकारी मानकों का ठीक प्रकार से पालन नहीं करते हैं। प्रायः देखा गया है कि दूषित मद्यपान से लोग मर भी जाते हैं। इस पुस्तक में लेखिका ने मद्यपान से किस प्रकार से छुटकारा पा सकते हैं, इसके विषय में भी निदानों का उल्लेख किया है।

अनेक समस्याओं यथा प्रशासन में कमी, पुलिस प्रशासन में कमी की ओर तो ध्यान दिया गया है परन्तु विशेष रूप से आज की ज्वलन्त समस्या 'प्रदूषण' की है। इस समस्या को बड़ी गहनता के साथ अध्ययन किया गया है। फर्रुखाबाद में भारत की सबसे पुण्यदायक नदी 'गंगा' का भी प्रवाह निकला है। इसमें गिरने वाली गन्दगी की ओर ध्यान दिया गया है। प्रदूषण से किस प्रकार से हम छुटकारा पा सकते हैं, क्या सामाजिक दायित्व है? इसके विषय में भी बहुत ही प्रभावकारी उपायों के सुझाव भी दिये गए हैं।

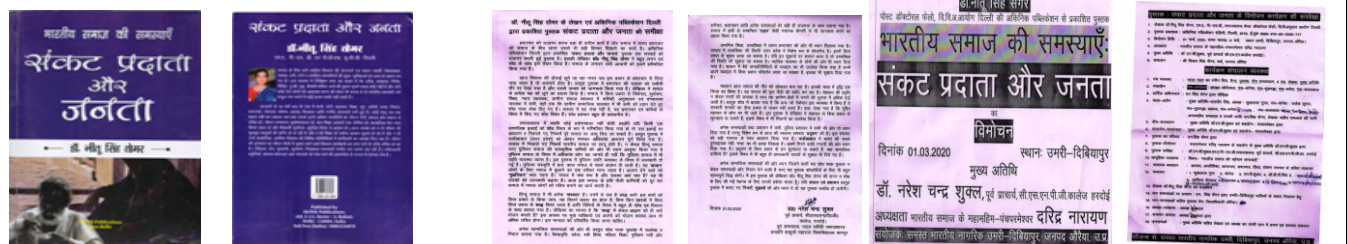
अनेक सामाजिक समस्याओं की ओर ध्यान दिलाने वाली यह शोध परक पुस्तक न केवल समस्याओं और निदान देने वाली है वरन् यह पुस्तक शोधार्थियों के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। मैं इस पुस्तक की लेखिका डॉ० नीतू सिंह तोमर की लगन व शोध के लिए की गई मेहनत के लिए उनकी प्रशंसा करता हूँ। यदि शासन एवं प्रशासन प्रस्तुत पुस्तक में बताए गए नियमों, सुझावों की ओर ध्यान दे तो यह पुस्तक सार्थक हो जायेगी।

दिनांक 01.03.2020

संलग्नक: पुस्तक कवर-पेज, समीक्षा-पत्र, विमोचन-विवरण

समीक्षक—डा.नरेश चन्द्र शुक्ल, पूर्व प्राचार्य एवं

विभागाध्यक्ष—समाजशास्त्र सी.एस.एन.कालेज हरदोई, मोबाइल 9415563045



पुस्तक—भूमिका

भारतीय समाज में अनेक समुदाय एवं धर्म हैं। इनकी कुल जनसंख्या 1210193422 में 83.31 करोड़ ग्रामीण एवं 37.71 करोड़ शहरी तथा हिन्दू 80.5%, मुस्लिम 13.4%, ईसाई 2.3%, सिख 1.9%, बौद्ध 0.8%, जैन 0.4%, अन्य-धर्म 0.6%, धर्महीन 0.1% हैं। इनके अनेक देव, पीर, फकीर, भंते, गुरु, पन्थ और ईश हैं। इनकी मान्यताएँ 'सबका मालिक एक' और 'जगत के समस्त प्राणी ईश्वर की सन्तान' तथा 'किसी प्राणी को कष्ट देना' अथवा 'हिंसा करना' अपराध है। मृत्योपरान्त कयामत अवसर पर पाप-पुण्य का हिसाब होने पर दण्ड स्वरूप जीव को नरक-दण्ड का भोग अवश्य भोगना पड़ेगा।

समाज धार्मिक पाखण्डों के मकड़जाल में बुरी तरह फंसा हुआ है। देव-स्थलों पर रखे पत्थर मानव के लिए पूजनीय हैं। धार्मिक प्रवचनों से वशीभूत मानव कुर्बान होते हैं। जेहाद नाम पर नरसंहार होता है। कर्मकाण्डों में जीव बलि दी जाती है। पाखण्डी स्वयंभू ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित होकर भोग विलास में लिप्त हैं। देवस्थल तस्करी एवं आतंकवादियों के अड्डे बने हुए हैं। यहाँ से अफवाहें फैला कर व्यक्ति-समाज को भय, दहशत, अराजकता, अन्धानुकृत वातावरण में रहने को मजबूर किया जाता है।

जनता के लिए बनी राष्ट्रीय विकास की योजनाएँ एवं साधन स्वार्थी, विध्वंशक, नाशक, धनी, ठगों व संगठित अपराधियों की सुख-सुविधाओं एवं आय के साधन बन गए हैं। इस सम्बन्ध में निरीक्षण तथ्य यह बताते हैं कि दरिद्र, असहाय, निरीह, पीड़ित, दुःखी, वृद्ध, बीमारी ग्रसित जनों की पुकार सुनने वाला कोई नहीं है और यदि कोई ऐसे लोगों की सहायता करने की चेष्टा भी करता है तो संगठित अपराधी उसे समूल नष्ट करने में कोई कसर बाँकी नहीं रखते हैं।

राजनेताओं का प्रयास सत्ता एवं शक्ति पर किसी भी प्रकार अधिकार प्राप्त करना और तब तक उसके साथ चिपके रहने से होता है जब तक चुनाव के द्वारा उन्हें उखाड़ न फेंका जाय। उनका यह भी प्रयास होता है कि सत्ता पर उनके ही परिवार का व्यक्ति स्थापित हो जाए। हर बात जनता की दुहाई देकर लोगों के भावात्मक आवेश को ये प्रतिनिधि अपने पक्ष में कर लेते हैं फिर चरवाहे की तरह इन भेड़ों को हाँकते हैं। जनता पागल होकर इनके पीछे दौड़ती रहती है, इनका यशगान करती रहती है और उन्हें अपना भाग्य-विधाता मानकर पूजा करने लगती है लेकिन अन्ततोगत्वा यह मालूम पड़ जाता है कि ये शक्तियाँ सारा नाटक अपने स्वार्थी केन्द्र के चारों ओर ही रचती हैं। भेद खुल जाने पर पुजारियों को ज्यों ही शंका होने लगती है उन्हें निर्ममता से समाप्त कर दिया जाता है।

गरीब एवं उनके आश्रित जीवन की मूलभूत आवश्यक वस्तुओं के अभाव में जीवन-यापन कर रहे हैं। ये दरिद्र और उनके आश्रित रोटी के लिए रोज अपना जीवन दांव पर लगाते हैं। यह कूड़े-कचड़े के ढेरों में कबाड़ बीनते हैं, तालाब-गड्डों से मेड़क-मछली ढूँढ़ते हैं, खेत-वन में पक्षी-खरगोश पकड़ते हैं, बिलों में साँप निकालते हैं, कोल्ड में सड़े आलू बीनते हैं, भीख माँगते हैं और रूखी-सूखी रोटी से अपना तथा आश्रितों के पेट की भूख की आग मिटाते हैं। इनके आवास गन्दगी के ढेरों, गन्दे नालों, तालाबों, गन्दगी क्षेत्र में कीड़े-मकोड़ों के बीच टूटी-फूटी झोपड़ियों में हैं जहाँ जहरीले कीड़े-मकोड़ों का प्रकोप है। कुत्ते, बिल्ली, बकरी, बन्दर, नांग, बिच्छू, गधे, खच्चर आदि परिवार के सदस्य के रूप इनके साथ रह कर इनकी आजीविका एवं सुरक्षा में साथ निभाते हैं। यह दरिद्र और उनके आश्रित शिक्षा व रोजगार सहित दरिद्र कल्याण योजनाओं एवं आरक्षण लाभ से जबरदस्त वंचित हैं। इनको मिलने वाले भूमि-पट्टे, आवास, राशन, नौकरी, सब्सिडी, लोन, आरक्षण सभी कुछ सक्षम व कर्मचारी हड़प रहे हैं। दबंग इन पर अपराधी का ठप्पा लगाकर इनसे बेगार कराते एवं स्त्रियों से शराब बिकवाते हैं तथा मादक द्रव्य, शराब आदि फर्जी मामलों में फंसाकर जेल में डलवा देते हैं। नौकरी में आरक्षण होने के बावजूद एस.टी. वर्ग के व्यक्तियों की बेरोजगारी देश-समाज के लिए बड़ी चुनौती है।

भारत में निर्धन, दरिद्र, कंगाल और लाचार मनुष्यों का जीवन बुरी तरह संकटग्रस्त है। भरपेट भोजन, पहनने के लिए स्वच्छ वस्त्र और रहने के लिए आवास उनके सपने से भी परे हैं। उनके मन-मस्तिष्क पर मौत का साया मडराता दिखाई देता है। उनकी भूख की तड़फ और दर्द का विलाप सम्पन्न व्यक्ति को नाटक लगता है। उनका रक्त और काया व्यापारियों की आय के स्रोत बने गए हैं। लाचार मानव जहाँ भी जाता है उसका शिकार किया जाता है। मानव शिकार अवसर पर ढोल बजाकर उत्सव मनाए जा रहे हैं। धनी और विशिष्टजन साधारण जनता को ठीक उसी तरह शिकार बनाते हैं जिस प्रकार बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है या साँप अपने अण्डों को स्वयं निगल जाता है।

घटनाओं का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि अधिकतर घटनाएँ क्षेत्रों की राजनीति से जुड़े दबंगों एवं संगठित अपराधियों द्वारा घटित की जाती हैं। यह संगठित अपराधी पुलिस एवं प्रशासन से सौँठ-गौँठ कर योजनाबद्ध तरीके से घटनाओं को अन्जाम देते रहते हैं। इन आपराधिक घटनाओं में उन्हीं लोगों को शिकार बनाया जाता है जो सीधे और सरल स्वभाव के बाल, वृद्ध, गृहस्थ नर-नारी होते हैं। इन लोगों पर डाकू, लुटेरे, ठग और उनके गुर्गे तरह-तरह के प्रपंचों से अपना प्रभाव जमाते हैं। समाज के हितैषी बनने का ढोंग करते हैं। व्यक्तियों की निकटता पाकर उनके परिवार की जासूसी करते हैं। परिजनों को नगरों की सैर और तीर्थ-भ्रमण कराते हैं। परिवार में विवाद कराकर उनके आपसी सम्बन्ध विच्छेद कराते हैं। उनकी सम्पत्ति को विवादित कराकर अपने संरक्षण में लेने की कानूनी प्रक्रिया सम्पन्न कराते हैं। राजनेताओं, अधिकारियों तथा कुख्यात लोगों के सम्पर्क से भय और दहशत उत्पन्न कर लोगों के मन-मस्तिष्क पर अपना जबरदस्त प्रभाव बनाते हैं। इस प्रकार लोगों की अपने ऊपर पूर्ण निर्भरता और मानसिक दासता पाकर उनकी सम्पूर्ण धन-सम्पत्ति का हरण कर लेते हैं।

घटनाओं की चर्चा या विरोध या मुकदमा करने वाले लोगों का अपहरण कर लिया जाता है। उनकी माँ, बहिन, बेटी और पत्नी को अपनी हवस का शिकार बनाकर धन-सम्पत्ति लूट ली जाती है। वादी के सहयोगी और गवाहों की हत्या कर दी जाती है। घटित हो रही घटना की सूचना पर पुलिस मौका बारदात जाने से बचती है। डाकू-लुटेरे घटना को अन्जाम देने के बाद गाँव-नगर के बाहर जाकर 'इधर गए, उधर गए' कहकर शोर मचाते हैं। जिससे लोग एकत्रित होते हैं और बदमाशों की खोज का नाटक होता है। पुलिस के समक्ष पीड़ित पक्ष के आक्रोश पर पुलिस के लोग ऊल-जलूल तर्क देकर निर्धारित पुलिस कार्यवाही की उपेक्षा कर अपराधियों को बचाने का प्रयास करते हैं। अदालत और अधिकारियों के आदेशों पर कानूनी कार्यवाही उपरान्त मामलों में एफ. आर. लगाकर कार्यवाही बन्द कर दी जाती है। यदि पीड़ित की ओर से कोई मुकदमा पैरवी की जाती है तो संगठित दबंग अपराधी और पुलिस के लोग बौखलाकर वादी को धमकाकर-मारपीट तथा अमानुषिक उत्पीड़न कर फर्जी मामलों में फंसाकर जेल में डलवा देते हैं। न्यायालय सुनवाई के दौरान अपराध स्वीकार कराने हेतु दबाव डाला जाता है तथा अपराध स्वीकार न करने पर झूठी गवाही देकर सजा करवा दी जाती है।

आजादी के 70 वर्षों बाद भी देश में रोजी, रोटी, स्वास्थ्य, शिक्षा, लूट, डकैती, हत्या, रिश्वत, भ्रष्टाचार, घोटाला, शोषण, आतंक, मिलावट आदि गम्भीर समस्याएँ बनी हुई हैं। कोई राष्ट्र तब तक महान नहीं बन सकता जब तक उसके इतने अधिक नागरिकों का जीवन रोटी, कपड़ा और मकान से वंचित हो, जीवन सम्भावना कुपोषणग्रस्त हो, कम शिक्षा अवसरों तक सीमित हो, सामाजिक भेद-भाव किया जाता हो और विद्यार्थी सूर्योदय-सूर्यास्त दिशा से अज्ञान हों। आज जनता को न तो जीवन की मूलभूत वस्तुओं की प्राप्ति हो पा रही है और न ही शिक्षा के पर्याप्त अवसर सुलभ हो रहे हैं और न ही उन्हें सामाजिक, आर्थिक विकास की विविध गतिविधियों में भागीदारी का अवसर मिल रहा है। जीवन की गुणवत्ता एवं जीवन शैली में सुधार लाने वाले विकास कार्यक्रमों का लाभ पाने से दरिद्र वंचित हो रहे हैं। दरिद्रता, रोग, भुखमरी, कुपोषण, निरक्षरता समस्याएँ गम्भीर रूप धारण कर रही हैं। स्फीतकारी प्रवृत्तियों, व्यापक भ्रष्टाचार तथा घोटालों को रोक पाने की असमर्थता से जनता में व्यापक रोष है।

भारत में दीन-हीन असहाय की सहायता करना धर्म और धर्म को 'जीवन का अनुशासन समझा जाता है। धर्म का पालन कर मनुष्य स्वयं का हित करते हुए सारी मानव जाति का भी हित करता है। देश के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने लोगों में धर्म के प्रति आस्था जगाने के सतत् प्रयत्न किये। उन्होंने धर्म के तत्त्व व महत्व एवं जीवन पर उसके प्रभावों का मूल्य समझा और बताया कि धर्म के सहारे सफल जीवन यापन किया जा सकता है। वर्तमान बदलते परिवेश में भारतीय समाज में समस्याओं का जो रूप उभर कर सामने आया है। उससे मुझे समाज की समस्याओं के स्वरूप को संग्रहित करने की विशेष उत्कण्ठा हुई। एतदर्थ इस विषय पर कार्य करने का विचार आया। परिणामतः मैंने यह भारतीय समाज की समस्याएँ: **संकट प्रदाता और जनता** का ग्रन्थ लिखना प्रारम्भ किया तथा जन-समस्याओं के संग्रह हेतु विभिन्न ग्रन्थों का अध्ययन करके कानून परिक्षेत्र के जिलों में जाकर जनसमस्याएँ संग्रहित कीं। पुस्तक का सम्पूर्ण प्रतिपाद 128 सामाजिक मुद्दों का संग्रह—**संकट प्रदाता और जनता** है।

विषयानुक्रमणिका

क्रम	विषय-विवरण	पृष्ठ सं
1.	भारतीय समाज की धार्मिक विभिन्नता में निहित एकता	01
2.	भारत के राष्ट्रीय संग्रहालयों में वास्तविक अवशेषों का अभाव	02
3	पदक, पुरस्कार और बन्दर-बौट	03
4.	ट्रस्ट-समितियों-स्वयं सेवी संगठनों के समाज विरोधी आचरण	04-
5	मानवीय मूल्यों का नैतिक महत्त्व : एक समाजिक विवेचन	06
6	पर्यटन, व्यवसायवाद एवं मानव प्रसन्नता : चुनौतियाँ एवं अवसर	09
7	उपहास और विश्वास	11
8	वैतनभोगियों की अतिरिक्त धन-सम्पत्ति और कालाधन	12
9	धन का असमान वितरण और शोषण परम्परा	13
10	दरिद्र व्यक्तियों की समस्याओं का वर्तमान स्वरूप	15
11	निर्धनता, कुपोषण और दरिद्रता	23
12	दरिद्रता कुचक्र और अर्थव्यवस्था	28
13	फर्रुखाबाद के काशीराम शहरी गरीब आवासों पर अवैध कब्जों का विवेचन	31
14	खाद्य अधिकार की सुरक्षा और सार्वजनिक वितरण व्यवस्था	37.
15	भारतीय कृषक और राजनीति	42
16	गरीबों की ठेकेदारी और सामूहिक नीलामी	45
17	दासता की मूर्त और बन्धुआ मजदूर	47
18	फर्रुखाबाद के दरिद्र हवालातियों के अमानुषिक उत्पीड़न का वर्तमान स्वरूप	48
19	शासकों की शरारत और जनशोषण	49
20	साधारण जनता को इन्साफ चाहिए	51
21	भ्रष्टाचारमुक्त न्याय की अपेक्षा और जनता	53
22	अमीर एवं गरीब तथा संरक्षकता सिद्धान्त	56
23	भारत में आरक्षण की आवश्यकता और दरिद्रता	58
24	सामाजिक कुरीतियों का परिणाम गैर-किसानीकरण	61
25	भारतीय जनता का धार्मिक वितरण और अल्पसंख्यक	62
26	भारत में लोक सशक्तीकरण	65
27	राज्य व्यवस्था के आधार	66
28	श्रेष्ठ नेतृत्व	67
29	अनुशासन, दण्ड और मौन	69
30	भाषा, वेश और शिष्टाचार	71
31	मानवता की रक्षा के लिए श्रेष्ठजनों की आवश्यकता	73
32	भारत माता के महान सपूत स्वामी विवेकानन्द	74
33	मानकीय शिक्षण से ही व्यक्तित्व विकास सम्भव	76
34	गाँधी और समाजवाद	77
35	सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह	79
36	सर्वोदय, स्वराज और आदर्श समाज	81
37	शासक-धर्म, राज्य-व्यवस्था और न्याय-व्यवस्था	83
38	मानवता का धर्म और लोकतन्त्र	85
39	राज्यसभा, लोकसभा और भारतीय संसद	87
40	लाकतान्त्रिक राज्य व्यवस्था और नेता	91
41	पद प्रसाद राज्यपाल और सरकार	93
42	भारत में पद प्रसाद और रोजगार का वर्तमान स्वरूप	95
43	पद प्रसाद और परिवार तथा अत्याचार	97
44	अभिजन शासन और सिंहासन	99
45	नायक, सत्ता और शरारत	102
46	शरारती प्रभुत्व और नेतृत्व	104
47	देश में सार्थक जन-नेतृत्व का अभाव	109
48	उ. प्र. राज्य की राजनीति और लोक प्रशासन का वर्तमान स्वरूप	110
49	राजनीतिक प्रतिनिधियों की मनमानी और गुलामी	113
50	समाज का रक्षण भक्षण और संरक्षण	116
51	विकास में बाधक भ्रष्टाचार प्रदूषक	118
52	सरकारी योजनाओं की लूट पर अंकुश लगे बिना जन-कल्याण असम्भव	120
53	भ्रष्टाचार उन्मूलन और लोकोद्धार	123
54	शिक्षा और समाज	125
55	शिक्षा उपाधि	127
56	जन-उपयोगी नहीं रही परिषदीय शिक्षा और सरकारी चिकित्सा	129
57	विद्या, विधान और संस्थान-फर्रुखाबाद के कालेजो का अध्ययन	130
58	शिक्षा संस्थान और धोखा	135
59	शिक्षा संस्थाओं का वर्तमान स्वरूप	137
60	कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कालेजों की शिक्षा का वर्तमान स्वरूप	139
61	फर्रुखाबाद की निरक्षरता और शिक्षा का वर्तमान स्वरूप	144
62	व्यक्तित्व विकास के लिए मानकीय शिक्षण जरूरी	148
63	किराए की डिग्री से संचालित कालेज बन्द होने चाहिए	149
64	उच्च-शिक्षा के सुधार हेतु तथ्यात्मक सुझाव	151
65	समाज सुधार एवं समाज सुधार आन्दोलन की पृष्ठभूमि	153

66	भारतीय गाँवों एवं नगरों में सामाजिक वर्ग संरचना	154
67	भारतीय जनपद फर्रुखाबाद के नगरों का वर्तमान स्वरूप	155
68	झुग्गी-झोपड़ियों वाले गाँवों की बस्तियों के लोगों की गरीबी और दुर्दशा	163
69	बस्ती गन्दगी और बीमारी	164
70	मानव शरीर और रोग तथा उपचार	167
71	रोग चिकित्सा और अस्पताल	169
72	मदिरा और मानव	172
73	नशा और नाश	175
74	अपराध विकास और सत्यानाश	178
75	अपराध तत्त्व का सामाजिक विश्लेषण	180
76	पाप, क्रूरता और दुराचार	182
77	अपराध का ठप्पा और अपराध	184
78	समाज का रक्षण, भक्षण और संरक्षण	186
79	सफेदपोश अपराध के कारण और निवारण	188
80	अपराध, न्याय और दण्ड के व्यवहारिक स्वरूप	190
81	देहाती-शहरी अपराध और डाकू-महाजन अत्याचार	193
82	रहीसों की शरारत का समाज पर प्रभाव	195
83	अपराध और साइबरस्टॉकिंग	197
84	अजगर प्रभुत्व और आतंकवाद	201
85	बड़े बाप की बिगडेल सन्तान और आतंकवाद	203
86	भारत में आतंकवाद	205
87	पंचायतीराज में महिलाओं पदासीनता का वर्तमान स्वरूप	209
88	महिलाओं की शैक्षिक समस्याएँ और मानव विकास	211
89	वैश्वीकरण युग में महिलाओं की समस्याएँ	213
90	दहेज दानव और नारी हिंसा	216
91	नारी हिंसा और अपराध	219
92	वेश्यावृत्ति उन्मूलन और नारी उद्धार	221
93	मुस्लिम नारियाँ और शरीअत	223
94	खौफनाक बीमारी एड्स	225
95	रास रहस्य और बलात्कार	227
96	विसंगति	229
97	संविधान उपेक्षा, अराजकता और पुलिस-प्रशासन	230
98	शांति व्यवस्था और पुलिस	231
99	मानव अधिकार और जेल व्यवस्था	233
100	घर एक मन्दिर : (घर का भव्य भवन हो या झोपड़ी, उसमें व्यक्तित्व विकास का यज्ञ हमेशा ही चलता रहता है)	236
101	हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय तथा धर्म	237
102	हिन्दू संस्कार	244
103	आश्रम व्यवस्था : ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास	246
104	गौ-संरक्षण	248
105	श्राद्ध (कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं, बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा)	249
106	अजान के मंगलकारी स्वर	251
107	नमाज का सामाजिक विश्लेषण	252
108	पैगामे मुहर्रम	253
109	जाति प्रथा का सामाजिक विश्लेषण	255
110	भारत में मुस्लिम जाति-प्रथा	256
111	क्षत्रिय और समाज	258
112	कानपुर परिक्षेत्र के क्षत्रियों का वर्तमान स्वरूप	259
113	अस्पृश्यता	261
114	धार्मिक धूर्तता और पाखण्ड	262
115	जीव हत्यारा और भाग्यविधाता	263
116	पुजारियों के बर्बर प्रपंच	264
117	सत्संग, प्रपंच और अत्याचार	267
118	धर्म और जादू	269
119	ग्रह-नक्षत्र, हस्तरेखा और अंक ज्योतिष	271
120	प्रेताविष्ट, प्रेतसभाएँ और जासूसी	275
121	Climatic Changes & Environmental Issues in Indian Context	277
122	Climate Change and its Implication Crop & Food Security	280
123	प्राकृतिक गुणवत्ता में प्रतिकूल परिवर्तन या पर्यावरण प्रदूषण	284
124	जल संसाधन : नेशनल रिवर कन्जरवैषन प्लान इण्डिया	287
125	कानपुर प्रदूषण से विषाक्त गंगाजल एवं जनजीवन	289
126	वषाक्त जल से प्रभावित जन जीवन : फतेहगढ़ नगर की जलापूर्ति का अध्ययन	291
127	प्रदूषण से विषाक्त गंगाजल: सामूहिक स्नानों से प्रभावित जनजीवन का समाज. अध्ययन	293
128	विकास मानकों की उपेक्षा और दरिद्रता : (औरैया जनपद के बिधूना ब्लाक की ग्रामसभा ताजपुर का विवेचन)	302